पैसे देकर अन्धे बनो !

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग ११ सम्पादक – प्यारेलाल अंक १०

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० ६ अप्रैल, १९४७

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

सर्जनात्मक या तख़लीक़ी आज़ादी

[अलाहबादमें होनेवाली सूबा कांग्रेस कमेटियोंके प्रेसिडेण्ट और सेक्रेटरियोंकी सभामें आचार्य कृपालानीने जो भाषण दिया था, अुसका सार यहाँ दिया जाता है। जे० सी० कुमारप्पा]

"यहाँ हम सब अैसे लोग अिकट्ठा हुअे हैं, जिन्होंने पिछले दिनोंमें अपनी पढ़ाअी या रोज़ी छोड़ी, जेल गये और लाठियाँ सहीं। मुझे अुम्मीद है कि सादगी और क़ुरबानीके जिन अक़ीदोंने हमें अुस वक़्त प्रेरणा दी थी वे ही हमें आगे भी गिरनेसे बचाये रहेंगे।

अिनाम

"अुस वक़्त हमने सपनेमें भी नहीं सोचा था कि अपनी क़ुरबानियोंके लिअे हमें दुनियावी अिनाम मिलेंगे। मगर आज चूँकि सचमुच अैसे अिनाम मिलनेकी आशा है, हम खतरनाक लालचोंके शिकार बन गये हैं। हममेंसे सभी अुन्हें रोकनेमें कामयाब नहीं हुअे हैं। हम नाज़ुक और आरामतलब होते जा रहे हैं। हम सरकारी ओहदों और वज़ारतोंके पीछे पड़ गये हैं और अुन्हें पानेवालोंसे जलते हैं।

"जब हम ओहदोंपर होते हैं, तो अपने अुन पूर्वाधिकारी (साबिक़) अंग्रेज़ोंकी नक़ल करते हैं, जिनकी तौहीन करना हमें बड़ा अच्छा लगता है। हमारी संस्था, अपनेपर क़ाबू रखने और अपने-आप क़ुरबानी करनेके गुणोंके आधारपर बनी हुअी है और अगर हम अिन आदर्शोंको अितनी आसानीसे छोड़ देंगे, तो हम अपने मुल्कवालोंको सच्चा स्वराज नहीं दिला सकेंगे।

अपनेपर क़ाबू रखना

"दरअसल अपनेपर क़ाबू रखे बिना सच्ची आज़ादी मिल नहीं सकती। अगर आज़ादीका यह मतलब हो कि हर आदमी जैसा चाहे वैसा करे, तो अैसी आज़ादी, जितनी हमें हिन्दुस्तानमें मिली हुअी है अुतनी दुनियामें और किसी जगह नहीं पाई जाती।

"हम कहीं भी थूक सकते हैं और चाहे जहाँ गंदगी फैला सकते हैं। हमारी औरतें रोज़ाना नियमसे आम रास्तोंपर कूड़ा-करकट फेंकती हैं। हम अपने बच्चोंको अपढ़ रखने और हमारे घरोंमें रहनेवाली बीमारियाँ अपने पड़ोसियोंमें फैलानेके लिअे आज़ाद हैं।

"टैम्स नदीको गँदला करनेके लिअे अेक अंग्रेज़ जितना आज़ाद है, अुससे कहीं ज़्यादा आज़ादीसे हम गंगाको गँदला कर सकते हैं। तारीफ़ यह है कि हम गंगाकी पूजा करते हैं और अंग्रेज़ टैम्सको पूजनेका ढोंग नहीं करते। दूसरी मिसाल लीजिये — हमारे नौजवान विद्यार्थी (तालिब अिल्म) ज़िन्दगीका कोअी तजरबा रखे बग़ैर हमें हुक्म देनेकी ढीठता करते हैं, जब कि किसी विद्यार्थीने चर्चिलको यह बतलानेकी हिम्मत न की होती कि अुन्हें जर्मनीके ख़िलाफ़ किस तरह लड़ाअी जारी रखनी चाहिये।

"बिहारकी मेरी पिछली सफरके दरम्यान नौजवान विद्यार्थी बिना टिकट लिअे आज़ादीसे मेरी रेलगाड़ीपर चढ़ गये। अुन्होंने कअी बार बेखटके चेन खींची और कांग्रेसके प्रेसिडेण्टकी अिज़्ज़त करनेका दिखावा करनेके लिअे ट्रेनको रोका। आज़ादीके अैसे दिखावे अिंग्लैण्ड और दूसरे आज़ाद मुल्कोंमें होते कभी सुने नहीं जाते।

सच्ची आज़ादी

"सच्ची आज़ादी सर्जनात्मक (तख़लीक़ी) होती है, विनाशक (बरबाद करनेवाली) नहीं। वह अपनेपर क़ाबू करनेके साथ बढ़ती है। अगरचे महात्मा गांधी सबसे ज़्यादा आज़ाद शख़्स हैं, मगर वे सिगरेट पीने, शराब पीने या बारबार सिनेमा देखनेके लिअे आज़ाद नहीं हैं। अुनकी आज़ादी अुस नर्तक (नाचनेवाले) की आज़ादी है, जिसे तलवारकी धारपर नाचना होता है।

"वे अेक ही साथ सबसे ज़्यादा आज़ाद और सबसे ज़्यादा अपनेपर क़ाबू रखनेवाले हैं। अिनमेंसे पहली बात आसान होनेसे, हम लोग अुसे अच्छी तरह सीख गये हैं। दूसरीको सीखनेकी हमने परवाह ही न की। बड़ा काम और ओछा दिमाग़ अिन दोनोंका कभी मेल नहीं बैठ सकता।

"जबतक हम छोटे हितोंके अूपर बड़े हितोंको तरजीह नहीं देते, हम स्वराज नहीं ले सकते।

"बिहारके अपने पिछले तजरबेसे अेक मिसाल मैं आपको देता हूँ। अेक रेलवे जंक्शनपर पहुँचनेमें हमें देर हो गअी। मैं परेशान था, मगर मुक़ामी कांग्रेस-सेक्रेटरीने मुझे विश्वास दिलाते हुअे कहा 'मैंने गाड़ीको आपके लिअे ठहरा दिया है, अिसलिअे आप चिन्ता न करें।" यह मेरा मान था या अपमान?

"अगर कांग्रेसी आदमी लोगोंके सेवक बननेके बजाय अुनके साथ हाकिमों जैसा बरताव करें, तो यह कहना बिलकुल मौजूँ है कि आज हमारे देशमें जनताकी सरकारें नहीं, बल्कि कांग्रेस सरकारें हैं। अैसी हुकूमत अुन पठान, मुगल, राजपूत, मराठा या सिक्ख हुकूमतोंसे किसी तरह भी अच्छी न होगी, जो हिन्दुस्तानकी तवारीखमें पहले यहाँ रह चुकी हैं।

"दिल्लीमें सामराज बनते और बिगड़ते रहे हैं। अगर कोअी यह सोचता हो कि दिल्लीपर कब्ज़ा कर लेनेसे हमको स्वराज मिल जायगा, तो वह बहुत बड़ी ग़लतीपर है। हमारा स्वराज तो सिर्फ़ जनताकी सेवाके ज़रिये गाँवोंमें ही हासिल हो सकता है। जिस नसैनीसे हम अूपर चढ़ते हैं, अुसे ही ठुकरा देना ख़ुदकुशी करना है।

हिंसाका ख़तरा

"अभी मैंने दो साथ-साथ चलनेवाले ख़तरोंकी चर्चा की है। अुनमेंसे अेक है — दुनियावी फ़ायदे अुठानेके लालचमें पड़ जाना और दूसरा है बड़े क़ौमी हितके सामने पार्टी, ज्ञाति या गुट्टके छोटे हितको

www.vinoba.in

तरजीह देना। हमारा तीसरा बड़ा खतरा और शायद सबसे बड़ा खतरा हिंसाका है।

"मैं हिंसा बनाम अहिंसाकी अच्छाअियों और बुराअियोंकी चर्चामें नहीं पड़ना चाहता। मैं सिर्फ़ अिस बातपर ज़ोर देना चाहता हूँ कि जिस हालतमें हम अिस वक़्त हैं अुसमें हिंसाका प्रयोग करना हमारे लिअे अशुभ होगा। अगर हम अंग्रेज़ोंसे हिंसाकी लड़ाअी लड़ेंगे, तो जल्द या देरसे, बल्कि जल्द ही, आपसमें अेक-दूसरेके खिलाफ़ अुसका अिस्तेमाल करने लगेंगे।

"हममें ज़रूरी अनुशासन या निज़ाम और अुसके अिस्तेमालके बारेमें आपसके ज़रूरी समझौतेकी कमी है; ये बातें अंग्रेज़ोंने अच्छी तरह सीख ली हैं।

"अिंग्लैंडकी जुदा जुदा सियासी पार्टियोंमें हमसे कम वैर-भाव और लाग-डाँट नहीं है। मगर वहाँकी कोअी पार्टी दूसरीको डरानेके लिअे हिंसाका प्रयोग करनेकी बात कभी नहीं सोचती। अितना ही नहीं; चर्चिल, जर्मनों और हिन्दुस्तानियोंसे बरतनेमें चाहे जितना बेरहम और ग़ैरज़िम्मेदार रहा हो, मगर अिंग्लैण्डमें चुनावके वक़्त वोटोंमें गड़बड़ करनेके लिअे अपनी हुकूमतका अिस्तेमाल करनेकी बात कभी अुसके दिमाग़में नहीं आअी होगी, जब कि वह जानता था कि अुस चुनावमें वह गिर जायगा।

सियासी नैतिकता (अिख़लाक़)

"हमारी सियासी और मज़हबी ज़िन्दगीमें अितने डिविज़न और बेबुनियाद बैर-भाव हैं, व निज़ाम और ख़ुदपर क़ाबू रखनेकी अितनी कमी है कि हम अपनी मर्ज़ी पूरी करनेके लिअे अगर अेक बार भी हिंसाका सहारा लेंगे, तो हम यह कभी नहीं जान पायेंगे कि हमें कब और कहाँ रुकना चाहिये।

"दरअसल हमारी आपसी जलन और दुश्मनी अितनी कड़ुअी और क़लील हो जाती है कि हम अक्सर भूल जाते हैं कि हमारे सच्चे दुश्मन कौन हैं। सिर्फ़ फ़िरक़ापरस्त लोग ही नहीं, बल्कि कुछ कांग्रेसी भी कभी कभी अिस तरह बोलते और बरतते हैं मानों अुनके सबसे बड़े दुश्मन वे हैं जिन्हें वे अपने सियासी मुक़ाबिल या प्रतियोगी समझते हैं।

"हमारी सियासी नैतिकता अितनी निचले दरजेकी है कि पृथ्वीराज और जयचन्दका किस्सा कभी पुराना नहीं पड़ा है। हमारे अपने देशभाअीके बजाय परदेसीके साथ सहयोग करना हमें आसान मालूम होता है। अगर अपनी मौजूदा हालतमें हम हिंसाका तरीक़ा अख़्तियार करें तो हमारे लिअे ख़ुदको नाबूद कर देनेका खतरा है।

अपना अनुशासन (निज़ाम)

"अिस तरह तो हम जमहूरियतको धब्बा लगाकर तानाशाहीके लिअे ही रास्ता तैयार करेंगे। आध्यात्मिक या रूहानी ज़िन्दगीकी तरह सियासी ज़िन्दगीमें अपनेपर अनुशासन या निज़ाम रखना सारे गुणोंकी बुनियाद है।

"यह मत सोचिये कि जिन ख़राबियोंके ख़िलाफ़ मैंने आपको चेतावनी दी है, अुनसे मैं खाली हूँ।

"मैं आपमेंसे ही अेक हूँ और आपसे किसी तरह बेहतर नहीं हूँ। साथ ही मुझे अुम्मीद है कि आपमेंसे बहुतोंसे मैं बुरा भी नहीं हूँ। बुराअियोंकी तरफ़ हम सब अेकसे ही झुके हुअे हैं और अगर हम महात्मा गांधी द्वारा हमारे सामने रखे हुअे अक़ीदोंको मज़बूतीसे पकड़े रहें, तो हममें अूपर अुठनेकी ताक़त भी अेकसी ही है। कअी बरसोंतक प्रोफेसर रहनेके कारण मौक़ा मिलनेपर मुझे ज़्यादा तक़रीर करनेकी आदत पड़ गअी है। तिसपर आपने मुझे अपना प्रेसिडेण्ट चुनकर मेरे लिअे कोअी दूसरा रास्ता ही नहीं छोड़ा।"

(अंग्रेज़ीसे)

जे० बी० कृपालानी

अनाज कैसे बचाया जाय?

देशमें अनाजकी मौजूदा कमीको ध्यानमें रखकर मगनवाड़ीमें ख़ुराकपर कुछ तजरबे किये गये थे। नीचे दिये गये नतीजे, जिनकी मगनवाड़ीमें जाँच की जा चुकी है, कुछ हद तक अनाजको बचानेमें मददगार साबित होंगे।

रेशनिंग महकमेके हाकिम कअी जगह अनाजके बदले आटा बाँटते हैं और चूँकि यह आटा घटिया क़िस्मके अनाजोंका होता है, अिसलिअे यह सुझाया गया है कि आटेको ज़्यादा ग़िज़ा पहुँचानेवाला बनानेके लिअे अुसमें केल्शियम मिलाया जाय। हमारा सुझाव है कि आटेमें १५ फ़ी सदी मूँगफलीकी साफ़ खली मिलाअी जाय। अिससे बहुतसे फ़ायदे होंगे—

१. १५ फ़ी सदी अनाजकी सीधी बचत होगी।
२. आटेमें प्रोटीनकी मिक़दार क़रीब-क़रीब दुगुनी हो जायगी।
३. क़ीमत बढ़नेके बजाय घट ही सकती है।
४. मूँगफलीकी खलीमें विटामिन 'बी' काम्प्लेक्स और खासकर विटामिन 'बी १' काफ़ी मात्रामें होता है।

खलीका चूरा अनाजके आटेमें जितने प्रमाणमें मौजूद रहेगा, वह सड़ेगा भी नहीं, क्योंकि आटेका ऑक्सिजन-विरोधी गुण अुसे सड़नेसे बचायेगा।

मूँगफलीके सिर्फ़ अच्छे और ताज़े दाने ही लेने चाहियें। अुन्हें हाथसे साफ़ करके बैलसे चलनेवाली घानियोंमें पेलना चाहिये। तेलको ठण्डी तरकीबसे निकालनेकी वजहसे मूँगफलीके ख़ूबत बढ़ानेवाले तत्त्व (जुन्न) बरबाद नहीं होते। दानोंका तेल निकाल लेनेके बाद खलीमें सिर्फ़ १० या ११ फ़ी सदी तेल बच रहता है। खलीकी टिकियाके छोटे-छोटे टुकड़े करके अुन्हें धूपमें सुखा लिया जाता है। अिस तरहकी खली कमसे कम अेक हफ़्ते तक बिलकुल ताज़ी और ज़ायकेदार रहेगी। छोटे-छोटे टुकड़े पत्थरोंकी तरह कड़े हो जाते हैं। ओखली और मूसलकी मददसे अुनका अुम्दा चूरा बनाया जा सकता है। अिस चूरेको हाथ-चक्कीमें पीसकर महीन आटा तैयार किया जा सकता है।

आटेमें १५ फ़ी सदी खली मिलानेका मतलब होगा हर रोज़की मामूली ख़ुराकमें डेढ़ छटाककी बचत। अिस आटेकी चीज़ें तैयार करना मुश्किल नहीं है। अुसमें साबित अनाजके आटेकी सारी अच्छाअियाँ मौजूद रहती हैं; साथ ही अुसमें खास तरहकी सुपारी जैसी ख़ुशबू रहती है, जो खानेको ज़्यादा ज़ायकेदार बना देती है। मूँगफलीकी खलीका आटा सिर्फ़ १५ फ़ी सदी मिलाया जाय, तो यह नहीं के बराबर होता है। अिसे ज़्यादा मिक़दारमें मिलानेपर ही अुसके ज़ायकेका मज़ा लिया जा सकता है।

अिस खलीमें ५० फ़ी सदीसे भी ज़्यादा अूँचे दरजेका प्रोटीन रहता है।

दूसरी जगह किये जानेवाले सायन्सी तजरबोंने यह भी साबित कर दिया है कि मूँगफलीके प्रोटीनमें अूँचे दरजेका हज़म होनेका गुण मौजूद रहता है। मूँगफलीका प्रोटीन ख़मीरके प्रोटीन जैसा ही होता है। और, दूध, अण्डों व मांसमें पाये जानेवाले प्रोटीन और मूँगफलीके प्रोटीनमें बहुत थोड़ा फ़र्क़ होता है।

बहुतसे तजरबोंके बाद हम अिस नतीजेपर पहुँचे हैं कि १ से २ छटाक तक मूँगफलीकी खली बड़ी आसानीसे पचाअी जा सकती है और अनाजके आटेके साथ मिलानेसे वह खानेको और भी ज़ायकेदार बना देती है। खलीके टुकड़े पानीमें भिगो दिये जाते हैं और लगभग २ घण्टोंमें अुनका अेकसा चूरा बन जाता है। अिस चूरेको आटेके साथ मिलाकर चपातियाँ बनाअी जा सकती हैं। अेक हिस्सा खलीके साथ ५ हिस्सा आटा मिलाना काफ़ी होगा। अगर दाल या तरकारीके साथ अिस चूरेको पकाया जाय, तो यह अुसके ज़ायकेको

www.vinoba.in

बढ़ा देता है। आधा हिस्सा अनाज और आधा हिस्सा खली, या अनाजके बिना भी सिर्फ़ खलीके चूरेकी तैयार की हुअी दलिया या लपसी बड़ी ज़ायकेदार बनती है।

मूँगफलीकी खलीके अैसे इस्तेमालसे ज़रूरतका थोड़ा अनाज बच सकता है; साथ ही खली तन्दुरुस्ती बढ़ानेवाली अुन्दा .खुराक भी होगी।

शकरकन्द — अिनमें काफ़ी स्टार्च (निशास्ता) होता है और ये अनाजके बदले अच्छी तरह काममें लाये जा सकते हैं। अुन्हें भापपर पकाया जाय, तो सारे पानीको भाप बनकर अुड़ जाने दिया जाय; वर्ना बहुतसे नमकीन पदार्थ पानीके साथ घुल जायँगे और अुन्हें पानीके साथ फेंक देना पड़ेगा।

शकरकन्द शाक-भाजी, दूध, या दहीके साथ मिलाकर या दूसरे किसी रूपमें खाये जा सकते हैं। अगर किसी वक़्तकी ख़ुराकमें अनाजकी जगह कन्दोंका ही इस्तेमाल किया जाय, तो अनाजकी मामूली मिक़दारसे वे थोड़ी ज्यादा मिक़दारमें खाये जायँ।

(अंग्रेज़ीसे)

देवेन्द्रकुमार गुप्त
(अ० भा० ग्रा० संघ)

बीबी अमतुल सलाम

बीबी अमतुल सलामने अपनी ज़िन्दगीके कअी साल हिन्दू-मुस्लिम अेकताके लिअे दिये हैं। पटियाला रियासत (पंजाब)के अेक मशहूर मुसलमान खानदानमें वे पैदा हुअी थीं। मगर अपने पैदायशी सुखोंको ठुकराकर सन् १९३०में वे गांधीजीके आश्रममें दाखिल हो गअीं। तभीसे वे गांधीजीके आदर्शों या अक़ीदोंके मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी गढ़नेकी कोशिशमें लगी हुअी हैं। बचपनसे ही अुनपर थिअॉसॉफ़ीका असर होनेके कारण वे सब मज़हबोंकी अेक सी अिज़्ज़त करती हैं; अगरचे वे खुद अेक पक्की मुसलमान हैं। हिन्दू और मुसलमानोंके बीच अेकता क़ायम करनेके जोशमें अुन्होंने सन् १९४२में 'अित्तहाद' नामका अेक हफ़्तेवार अख़बार भी निकाला, मगर कअी कारणोंसे अुसे बन्द कर देना पड़ा।

जब बंगालमें अकाल पड़ा, तो वे पूरबी बंगालमें जा पहुँचीं और अुन्होंने टिपरा ज़िलेके मुसीबतज़दा लोगोंकी बहुत बड़ी सेवा की। मगर ज़बरदस्त अिच्छाशक्ति रखते हुअे भी अुनका जिस्म बहुत कमज़ोर है, अिसलिअे अपनी बिगड़ी हुअी तन्दुरुस्तीको सुधारनेके लिअे अुन्हें सेवाग्राम जाना पड़ा। बंगालमें फ़िरक़ेवाराना दंगे शुरू हो गये। जब नोआखालीकी वारदातोंकी खबरें अुन्हें मिलीं, तो वे बेचैन हो अुठीं और गांधीजीके चौमुहानी पहुँचनेके थोड़े दिनों पहले बंगाल आ गअीं व मुसीबतज़दा हलकोंमें अमन क़ायम करनेकी कोशिशमें जुट गअीं।

वहाँ जो कुछ अुन्होंने देखा, अुससे अुनको बहुत तक़लीफ़ हुअी। सबसे पहले अुन्होंने दशघरियामें काम किया। वहाँसे फिर शिरण्डी गाँवको चली गअीं। कुछ कारणोंसे, जिनका यहाँ ज़िक्र करनेकी ज़रूरत नहीं है, बहन अमतुल सलामने १०४ डिग्रीका बुखार रहते हुअे वहाँ अुपवास किया।

अुपवासके नवें दिन अुन्होंने मुझे अेक बयान लिखवाया, जिसमें अुस अुपवासका मक़सद समझाया गया था। अिसके बारेमें फिलहाल मैं ज्यादा कुछ नहीं कहूँगी। मुझे सिर्फ़ इतना ही कहना है कि अपने धरम-भाअियोंके दिलोंमें सच्चे पछतावेकी भावना पैदा करनेकी ग़रज़से अुन्होंने अुपवास किया था। अुपवास जारी रहा और मुझे अुनकी ज़िन्दगीके बारेमें चिन्ता पैदा हो गअी।

हम सब बेचैन थे और असमंजसमें पड़े थे। अेक सिर्फ़ बीबी अमतुल सलाम ही शान्त थीं। अुन्होंने अपने-आपको .खुदाकी मर्ज़ीपर छोड़ दिया था और मरनेके लिअे तैयार थीं। यह श्रद्धाकी जाँच थी। आखिरी हफ़्तेमें वे अपना बुखार नहीं लेने देती थीं। हम लोग अुनके पेशाबकी जाँच करना चाहते थे। अुन्होंने अिस बात का विरोध किया। वे कहती थीं —"अिससे क्या फ़ायदा? अिससे तो सिर्फ़ परेशानी ही बढ़ेगी।" दूर और पासके दोस्त अुन्हें देखनेके लिअे आते थे और अुनको बहादुरीसे तक़लीफ़ें सहते देख प्रभावित होते थे। वे रोज़ाना गीता और .कुरान सुनती थीं, जिससे अुन्हें बड़ी तसल्ली होती थी। अेक डॉक्टर दोस्तने अुनसे कहा — "बहन, आपकी ज़िन्दगी अकेले आपकी ही नहीं है। क्या आप मुझे ग्लुकोज़का अेक अिन्जेक्शन नहीं देने देंगी? कमसे कम आप अितनी अिजाज़त दे दें कि अगर आप बेहोश हो जायँ, तो मैं आपको अिन्जेक्शन दे सकूँ।" बहन अमतुल सलामने अपनी आँखें खोलीं और मुश्किलके साथ बोलीं। अुनकी आवाज़ कमज़ोर, मगर साफ़ और यकसाँ थी। "मैंने अपनी ज़िन्दगी .खुदाके हवाले कर दी है। जो अुसकी मर्ज़ीमें आये, करे। अगर वह मुझे ज़िन्दा रखना चाहता है, तो मैं मर नहीं सकती। मुझे अिन्जेक्शन नहीं लेने चाहियें। और अुपवासका मक़सद पूरा होने तक अुसे जारी रखना ही चाहिये।"

पुलिस और मुक़ामी नेता भी परेशान थे। अुन्होंने भरसक कोशिश की। वे सब गांधीजीके पास गये और अुनसे दरख़ास्तकी कि वे किसी न किसी तरह बहन अमतुल सलामका अुपवास तुड़वा दें। गांधीजी अैसा नहीं कर सकते थे। बहनने अपने-आप अुपवास शुरू किया था और गांधीजीसे वचन ले लिया था कि वे अुपवास तोड़नेके लिअे अुन्हें मज़बूर न करेंगे। अपनी यात्राके दरम्यान गांधीजी २० जनवरीको शिरण्डी पहुँचनेवाले थे, जबकि बहन अमतुल सलामके अुपवासका २५ वाँ दिन पड़ता था। हमें शक था कि अितने अर्से तक वे कैसे ज़िन्दा रह सकेंगी, अिसलिअे हम चाहते थे कि गांधीजी जल्दी पहुँचें। हम सब महसूस करते थे कि गांधीजीके शिरण्डीमें रहनेसे वह काम बन सकता है, जो और किसी तरह नहीं हो सका और अुपवास भी कामयाबीके साथ खत्म हो सकता है। गांधीजी अपनी यात्राका प्रोग्राम बदलनेके लिअे तैयार नहीं थे और वे .खुद भी अिसके लिअे अुत्सुक नहीं थीं। अुन्होंने कहा — "बापूको मेरी आखिरी घड़ीमें ही आने दो, ताकि मैं अुनकी गोदमें दम तोड़ सकूँ।" और अिसलिअे गांधीजी २० जनवरीको शिरण्डी पहुँचे। गांधीजीके लिअे अुनके दिलमें अितनी भक्ति रही है कि अपनी भयंकर कमज़ोरीकी हालतमें भी अुन्होंने बिस्तरपर पड़े पड़े गांधीजीके ठहरनेके सारे अिन्तज़ामकी देखभाल की। और चूँकि वे .खुद चल नहीं सकती थीं, अिसलिअे अुन्होंने मुझे और आभा गांधीको गांधीजीका स्वागत करनेके लिअे भेजा।

तीन बजे दिनको अेक मुस्लिम डेपुटेशन गांधीजीसे मिला। नोआखालीकी वारदातोंके लिअे अुन्हें बहुत अफ़सोस था। अुन्होंने गांधीजीसे दरख़ास्तकी कि वे बीबी अमतुल सलामका अुपवास तुड़वानेके लिअे दरमियानमें पड़ें। गांधीजीने कहा — "मैं हिन्दू और मुसलमान दोनोंका दोस्त बनकर आया हूँ। अगर आप मेरा दिल चीरकर देख सकें, तो आपको वहाँ मोहब्बतके सिवा और कुछ नहीं मिलेगा। बीबी अमतुल सलामको मैं अपनी बेटीसे ज्यादा चाहता हूँ। मैं अुसे खोना नहीं चाहता। मेरी देखभालमें रहनेवाले मुसलमान लड़कोंको मैंने सिखाया है कि वे अपने मज़हबके पक्के रहें। और अिस बातकी फ़िक्र की है कि वे अपनी नमाज़ पढ़ते और रोज़े रखते हैं या नहीं। बीबी अमतुल सलाम अपने मुसलमान भाअियोंकी मज़हबी ग़ैरवादारी या धार्मिक असहिष्णुताको सह न सकीं, अिसलिअे अुन्होंने अपवास शुरू कर दिया। वे अिस्लामको प्यार करती हैं मगर हिन्दुओंसे नफ़रत नहीं करतीं। अुपवास शुरू करनेके लिअे अुन्होंने मुझसे अिजाज़त नहीं ली है। मैं अुनके अक़ीदेकी क़ीमत घटाना नहीं चाहता। अुपवासका मक़सद पूरा होना ही चाहिये। वह यह है कि मुसलमान अपनी ग़लती महसूस करें और अुसके लिअे तोबा करें। अगर आपको अिसका दिली अफ़सोस है, और आप भरोसा दिलाते हैं कि आगेसे अैसी वारदातें नहीं होंगी, तो मैं अुनसे अुपवास तोड़नेके लिअे कहूँगा। लोग चाहे जिस नामसे अुसे पुकारें आखिर .खुदा अेक ही है।

'मॉर्निंग न्यूज़' में मैंने क़ायदे आज़मका यह बयान पढ़ा है कि ज़ोर-ज़बरदस्तीसे पाकिस्तान क़ायम नहीं किया जा सकता।

www.vinoba.in

अुन्होंने यह भी कहा है कि पाकिस्तानमें कम तादादवालोंके लिअे पूरी आज़ादी और हिफ़ाज़त रहेगी। पूरबी बंगालमें मैं किसी सियासी मिशनको लेकर नहीं आया। मेरा मिशन पूरी तरह अिन्सानी है। अगर आप चाहते हैं कि हिन्दू पूरबी बंगालको छोड़ दें, तो आप यह बात साफ़-साफ़ कहें। अगर नहीं, तो जो नुक़सान हो चुका है, अुसे आप लोग पूरा करें और आगे चलकर अैसी वारदातें न होने देनेका भरोसा दिलायें। तब मैं सचमुच बीबी अमतुल सलामको अपना अुपवास तोड़नेके लिअे मज़बूर करूँगा। अगर आप कहेंगे कुछ और करेंगे कुछ, और वचन देकर बादमें अुसे तोड़ देंगे, तो अमतुल सलामके बजाय आपको मेरे अुपवासके दिन गिनने पड़ेंगे। पूरे ज़िलेके लिअे मैं आपको ज़िम्मेदार नहीं ठहरा सकता। मगर आपको अपने हलक़ेकी शान्तिकी ज़िम्मेदारी अपने सिर लेनी चाहिये। अैसा करके आप पूरे नोआखालीकी ही नहीं, बल्कि पूरे पूरबी बंगालकी शान्तिकी नींव डालेंगे।" आपसी सलाह-मशविरेके बाद, डेपुटेशन लेकर आये हुअे भाअियोंने अेक बयान तैयार किया, जिसमें पिछली वारदातोंके लिअे अफ़सोस ज़ाहिर किया गया था और भविष्यमें शिरण्डी और अुसके आसपासके चार गाँवोंमें रहनेवाले हिन्दुओंकी मज़हबी आज़ादीकी गारण्टी दी गअी थी।

शिरण्डी सहित पाँच गाँवोंके मुसलमानोंकी नुमाअिन्दगी करनेवाले खास खास मेम्बरोंने समझौतेपर दस्तखत किये। जब यह समझौता पूरा हुआ, तब रातके ९ बजे थे। मुसलमान दोस्तोंके क़ुरान पढ़नेके बाद गांधीजीने बीबी अमतुल सलामको अेक प्याला संतरेका रस दिया।

(अंग्रेज़ीसे) सुशीला नय्यर

हरिजनसेवक
६ अप्रैल १९४७

पैसे देकर अन्धे बनो!

वनस्पतिके बुरे असरके बारेमें हम पहले लिख चुके हैं। हाफकिन अिन्स्टिटयूट बम्बअीके डायरेक्टर सर अेस० अेन० सोखे कहते हैं— "हाफकिन अिन्स्टिटयूटमें हैड्रोजन मिले तेलके पोषक तत्त्वों या ताक़त देनेवाले जुज़ोंकी जाँच करनेपर पता चला है कि—

१. हैड्रोजन मिले तेलोंके अिस्तेमालसे अिन्सानकी बाढ़ मारी जाती है।

२. अुनके अिस्तेमालसे शरीरमें केलशियम बराबर रँजने नहीं पाता।

३. अुनकी वजहसे शरीरका चर्बीवाला ढाँचा बदल जाता है।"

कुछ दिनों पहले कौंसिल ऑफ़ स्टेट (हिन्दुस्तानकी बड़ी धारासभा) में डॉक्टर राजेन्द्रप्रसादने कहा था— "अिज़्ज़तनगरकी रिसर्च अिन्स्टिटयूट (खोज करनेवाली संस्था) की रिपोर्ट है कि वनस्पतिके अिस्तेमालसे तन्दुरुस्ती बिगड़ती है और आँखोंपर अुसका बुरा असर पड़ता है। अिसका चुहोंपर प्रयोग करनेसे पता चला है कि अुनकी तीसरी पीढ़ी अन्धी हो गअी है।" सायन्सके अिन प्रयोगोंको देखते हुअे यह सोचा जा सकता था कि प्रजाकी भलाअी चाहनेवाली कोअी भी सरकार अपने देशसे वनस्पतिको बाहर निकाल फेंकेगी और वनस्पति पैदा करनेवालोंको समाजके दुश्मन करार देकर जेलमें ठूँस देगी। मगर हिन्दुस्तानकी बरदाश्तगीकी ताक़त यहाँ तक बढ़ी हुअी है कि वह अपनेको नुक़सान पहुँचानेवालोंको भी छातीसे लगाता है।

हम जानते हैं कि सरकार वनस्पति और घीमें फ़र्क़ करनेके बारेमें यह सोच रही है कि जिस तेलसे वनस्पति बनाअी जाती है, वह तेल अुसमें ५ फ़ी सदी मिलाया जाय और अुसे रंगीन कर दिया जाय। मगर अिस विषयके खास जानकारोंकी राय है कि अैसा करनेसे नामको भी फ़ायदा नहीं होगा। वनस्पति अक्सर मूँगफली या बिनौलेके तेलसे बनाअी जाती है। घीसे वनस्पतिका फ़र्क़ करनेके लिअे अिन तेलोंको वनस्पतिमें थोड़े मिक़दारमें मिला देनेसे काम नहीं चलेगा। सायन्सदाँ लोगोंकी राय है कि अेक सिर्फ़ तिल्लीका तेल ही अैसा है, जिसकी कम-से-कम १० फ़ी सदीकी मिलावटसे कुछ असर हो सकता है। बाक़ी और किसी तेल के मिलानेसे कोअी फ़ायदा नहीं। अिसके सिवा वनस्पतिपर चढ़ाये हुअे रंगको तो बहुत थोड़े खर्चमें छुड़ाया जा सकता है। ताज्जुब यही है कि खास सवालको सीधे तरीक़ेसे हल करनेके बजाय अुसकी यह टेढ़ी-आड़ी पैरवी क्यों की जाती है?

यह साफ़ है कि वनस्पति पैदा करनेवाले लोग अिस अुद्योगमें जो खर्च करते हैं, अुससे पूरे देशको कोअी फ़ायदा नहीं होता। वे देशकी मौजूदा चर्बीमें कोअी बढ़ती नहीं करते; अुलटे हैड्रोजनके प्रयोगसे लोगोंका हाज़मा ही बिगाड़ते हैं और देशकी मौजूदा चर्बीको बरबाद करते हैं। ताज़े तेल, जो अिसके मुक़ाबले कम खर्चमें तैयार होते हैं, अुनकी वपस्पति बनानेवाली फैक्टरियोंमें ज़रूरत पड़ती है और ये अुन्हें असली क़ीमतसे दुगुनी रक़म चुकाकर खरीद लेती हैं। ये फैक्टरियाँ क़ुदरती भोजन-तत्त्वोंको बरबाद करती हैं व देशको पोषक तत्त्वोंकी कमीके कारण होनेवाली बीमारियोंका शिकार बनाती हैं। और हमें अुनके अिस अपकारकी क़ीमत मज़दूर, पूँजी और अिन्सानी कोशिशके रूपमें चुकानी पड़ती है। जब हम शान्त मनसे अिस सवालकी अच्छाअियों और बुराअियोंपर विचार करते हैं, तब हमें अपने अिस कामपर ताज्जुब होता है।

जहाँ तक अिस अुद्योगका खास मक़सद डेअरीके घीमें मिलावट करके अुसे बिगाड़ना है, यह डेअरीके अुद्योगपर सीधा वार है। जिस देशके ज़्यादातर लोग शाकाहारी यानी अनाज और शागपात खाकर गुज़र करनेवाले हों, वहाँ घीके अिस्तेमालको, चाहे जिस किसी तरह भी कम करनेसे लोगोंकी तन्दुरुस्ती बरबाद हो जायगी। यह दलील हमारे देशमें नहीं चल सकती कि पश्चिमी मुल्क मार्जेरीन यानी नकली मक्खन अिस्तेमाल करते हैं। वहाँपर लोग नकली मक्खनको डबल रोटीकी फाँकोंपर मक्खनकी तरह लगाते हैं, और मातदिल आबहवावाले मुल्कोंमें बहुत थोड़ी मात्रामें हैड्रोजनका मिलाया जाना ज़रूरी भी होता है। हमारे मुल्कमें अगर यह तरीक़ा काममें लाया जाय तब भी वह चीज़ पतली ही रहेगी। अिसके अलावा यूरोपके लोग दूसरे कअी तरीक़ोंसे जानवरोंकी चर्बी पा जाते हैं, क्योंकि वे गोश्त खानेवाले हैं और अुनका खाना भी जानवरोंकी चर्बीमें ही पकाया जाता है। अिसलिअे दूसरे मुल्कोंसे हिन्दुस्तानका किसी भी तरहसे मुक़ाबला करना ग़लत होगा।

हिन्दुस्तानका माली ढाँचा गायके आसपास खड़ा हुआ है। हमें खेत जोतने, सामान लाने-लेजाने, सवारी करने और दूध-घीके लिअे गायकी ज़रूरत पड़ती है। अिसलिअे कोअी भी काम जो गोपालनको नुक़सान पहुँचाता है, अुससे हमारे मुल्ककी माली हालतको भी नुक़सान पहुँचेगा। अिस मामलेपर सही तौरपर और बारीकीसे विचार करनेसे पता चलेगा कि वनस्पति पैदा करना गो-कुशी करनेके बराबर है। हम अुम्मीद करते हैं कि कमसे कम वे लोग जो गायकी पूजा करते हैं, सवालके अिस पहलूपर अीमानदारीसे विचार करेंगे और अेक अैसे धन्धेसे दूर रहेंगे, जो मुल्ककी भलाअीका सारा खयाल हटाकर पूरी तरह पैसेके लालचकी बुनियादपर खड़ा हुआ है।

माली दृष्टिकोणसे देखा जाय, तो जब वनस्पति मिलें बाज़ारसे वनस्पति तेल खरीदती हैं, तो मामूली तेलोंके भाव अूँचे हो जाते हैं। ग़रीबोंके चर्बी पानेका अेक मात्र ज़रिया ये तेल ही होते हैं, जिनके दाम बढ़ जानेसे अुन लोगोंको ज़्यादा दामोंपर अिन्हें खरीदना पड़ता है। जो धनवान् लोग यह हैड्रोजन मिला तेल अिस्तेमाल करते हैं, अुन्हें और भी अूँची क़ीमत चुकानी पड़ती है; और वह भी अैसे मालकी जो अुनके लिअे

www.vinoba.in

नुक़सानदेह साबित हो सकता है। अिसके बदलेमें अुन्हें मिलता कुछ नहीं। और अगर हैड्रोजनकी वजहसे अुनका हाज़मा बिगड़ जाता है, तो चर्बी भी नहीं। माना कि भावोंपर सरकारी कण्ट्रोल होनेकी वजहसे तेलोंके भाव नहीं बढ़ सकते, फिर भी बाज़ारमें सरमायादारोंके घुस आनेसे काले बाज़ारकी तरफ़ झुकाव पैदा हो गया है और अिससे तेलके ग़रीब ग्राहकोंके घरेलू बजटपर बहुत बोझ पड़ जाता है।

हमें 'अेडवायज़री प्लानिंग बोर्ड'की अुस सिफ़ारिशपर ताज्जुब होता है, जिसमें सुझाया गया है कि वनस्पतिकी अुपज अितनी बढ़ाअी जाय कि सन् १९४१ की ८२,००० टनकी अुसकी पैदावार सन् १९५० में ४००,००० टन हो जाय। हम अपने अुद्योग-धन्धोंको मुट्ठीभर लोगोंकी बेशुमार आमदनीके ज़रिये बना देना चाहते हैं, या अिनसानकी ज़रूरतें पूरी करनेके लिअे ज़रूरी चीज़ें तैयार करनेके साधन? क्या अिस मामलेमें हमारे सामने कोअी अिखलाक़ी या नैतिक ज़िम्मेदारी नहीं है? अुद्योग-धन्धोंसे ताल्लुक़ रखनेवाली हमारी नीति क्या अिनसानियतसे खाली रहेगी? अगर हाँ, तो हम जंगली हालतकी ओर बढ़ रहे हैं। हमें यक़ीन है कि जहाँ तक अिस अुद्योगका ताल्लुक़ है, अिसे जल्दसे जल्द खत्म कर दिया जायगा।

(अंग्रेज़ीसे) जे० सी० कुमारप्पा

गांधीजीकी बिहार-यात्राकी डायरी

१८-३-'४७

आजकी प्रार्थना-सभामें गांधीजीने मसूढ़ी गाँवके मुआअिनेका ज़िक्र किया और वहाँ देखी बरबादीका दर्दभरे शब्दोंमें बयान किया। अुन्होंने कहा — "मैंने मसूढ़ीकी घटनाओंके बारेमें पढ़ा है। मैंने मुस्लिम लीगकी रिपोर्ट भी पढ़ी है। मुझे यह कहते हुअे अफ़सोस होता है कि पहले मैंने अुसके बारेमें यह विश्वास कर लिया था कि वह बहुत बढ़ा-चढ़ा कर लिखी गअी है। लेकिन अब मैं यह तस्लीम करता हूँ कि मसूढ़ीके बारेमें बताअी गअी बहुतसी बातें सच साबित हो रही हैं। जो कुछ मैंने पढ़ा, फिर वह कितनी ही अीमानदारीसे क्यों न लिखा गया हो, अुसका असर सच्चे नज़ारेसे बिलकुल जुदा ही था। मुझसे यह कहा गया है कि मसूढ़ीकी दर्दनाक घटना बहुत हद तक नोआखाली-दिन मनानेके कारण पैदा हुअे अुभाड़का नतीजा थी। मुझसे यह भी कहा गया है कि बिहारके मुसलमान २३ मार्चको मनाये जानेवाले पंजाब-दिनकी बातोंसे घबरा अुठे हैं। मुझे आशा है कि यह सिर्फ़ अेक अफ़वाह है, जिसके पीछे कोअी सचाअी नहीं है। अिस तरहका दिन कहीं भी मनानेका साफ़ मतलब होगा भाअी-भाअीके बीचकी आपसी खूँरेज़ीको न्योतना। मैंने मुसलमान दोस्तोंसे यह कह दिया है कि अगर दुर्भागसे बिहारमें अैसा हुआ तो मैं आगमें जलकर मर जाना चाहूँगा। मैं भगवान्‌से हमेशा यही प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे अैसा भयानक और शर्मनाक दिन देखनेके लिअे ज़िन्दा न रखे!"

अिसके बाद गांधीजीने बीर जाते वक़्त पासके गाँवोंसे मिले हुअे दो खत पढ़ सुनाये। अेक सायनसे मिला था, दूसरा बरनीसे। आखिरमें गांधीजीने कहा — "भगवान् करे, गाँवोंके हिन्दू और मुसलमान बाशिन्दोंके लिखे कहे जानेवाले अिन खतोंमें दोस्तीकी जो भावना ज़ाहिर की गअी है, वह सब जगह फैल जाय।"

भाषणके बाद चन्दा अिकट्ठा किया गया। अिस दरमियान गांधीजी वहीं मौजूद रहे।

२१-३-'४७

गांधीजीने अपने भाषणके शुरूमें गड़वान गाँवके अपने मुआअिनेका ज़िक्र किया, जहाँ मर्द, औरत और बच्चोंको बड़ी बेदर्दीके साथ क़त्ल किया गया था। अुन्होंने प्रार्थना-सभामें अिकट्ठे हुअे लोगोंसे कहा — 'आप सब मरे हुअे लोगोंके साथ हमदर्दी ज़ाहिर करनेके लिअे चुप बैठें। आप अपने मनमें यह सोचें कि बेगुनाह औरतों और बच्चोंका खून क्यों किया गया? क्या यह किसी धर्मको बचानेके लिअे किया गया था? कोअी धर्म किसीको यह नहीं सिखाता कि वह अपने पड़ोसियोंको मार डाले। जो कुछ किया गया, वह अन्धाधुन्ध बरबादी थी — यहाँ मैं अिस बातपर विचार नहीं करूँगा कि यह निजी मतलब गाँठनेके लिअे किया गया था, या और किसी मक़सदसे।

"जो घर कुछ महीनों पहले ज़िन्दगीसे भरे-पूरे थे, वे आज अुजाड़ पड़े हैं। आप सब यह जानते हैं। लेकिन अब आगे क्या किया जाय? लोग अिस विश्वाससे गंगा नहाने जाते हैं कि अैसा करनेसे अुनके पाप धुल जायँगे। सामने पड़े बरबाद घरोंको देखकर आपको अपने अुन पापोंकी याद आनी चाहिये जो आपने बेबस और लाचार औरतों और बच्चोंपर किये हैं, और अुनसे छुटकारा पानेके विचारसे अपने पापोंका प्रायश्चित्त करना चाहिये। आपको बरबाद किये गये घरोंका मलबा साफ़ करके अुन्हें रहने लायक़ बना देना चाहिये। आपको पिछली घटनाओंके लिअे मुसलमान भाअियोंके सामने पछतावा ज़ाहिर करना चाहिये और यह कहकर अुन्हें अपने गाँवोंको लौटनेके लिअे राज़ी करना चाहिये कि आपके अैसा करनेपर ही हमारे मनको शान्ति मिलेगी। हो सकता है कि मुसलमान लौटकर आपसे यह सवाल पूछें — 'हम लौटकर अुन घरोंमें कैसे रहें, जहाँ हमारे प्रिय-जन क़त्ल कर दिये गये हैं?' मुसलमानोंका यह कहना ठीक ही होगा। लेकिन अगर जुर्म करने वाले या अुनके रिश्तेदार सच्चे पछतावेसे भरे दिलके साथ मुसलमानोंके पास जायें और अुन्हें यक़ीन दिलायें कि 'जो होना था, सो तो हो चुका, वह कभी दोहराया नहीं जायगा', तो मुझे विश्वास है कि पत्थरका कलेजा भी पिघल जायगा।"

गांधीजीने आगे कहा — "पागलपनके अिस अुभाड़के बीच यहाँ, रेगिस्तानमें सरसब्ज़ जगहकी तरह, अैसे लोग भी थे जिन्होंने खून-खच्चरकी भावनासे पागल बने लोगोंके गुस्सेका सामना करके भी कअी मुसलमानों और अुनकी जायदादको बचाया। अुन्हें मुबारकबाद दिया जाना चाहिये, हालाँकि अुन्हें अिसकी ज़रूरत नहीं है। अगर मैं अुनके पास नहीं जाता तो अिसका यह मतलब नहीं कि मैं अुनके कामकी क़दर नहीं करता। लेकिन मेरा काम तो अेक डॉक्टरका है, जो भले-चंगोंके पास नहीं बल्कि बीमारोंके पास ही जाता है।

"मुझसे यह कहा गया है कि दंगेमें हिन्दुओंको भी नुक़सान पहुँचा है। अगर अैसे कोअी लोग हों तो अुनकी भी मदद की जानी चाहिये। अुन्हें भी राहत दी जायगी।

"मेरे मसूढ़ी पहुँचनेके दूसरे दिन क़रीब ५० अैसे आदमियोंने अपने-आपको हाकिमोंके हवाले कर दिया, जिनकी दंगेके मामलोंमें सरकारको तलाश थी। मैं अिसका स्वागत करता हूँ। मुझे आशा है कि दंगेमें भाग लेनेवाले दूसरे लोग भी अपनेको हाकिमोंके हवाले करके अपने जुर्मोंको तस्लीम करेंगे और जो भी सज़ा दी जाय अुसे मंज़ूर करेंगे। अगर लोगोंमें अपनेको हाकिमोंको सौंप देनेकी हिम्मत न हो, तो वे मेरे, बादशाह खान या मेजर जनरल शाहनवाजके पास आकर अपने जुर्मोंका अिक़रार कर सकते हैं।"

आखिरमें गांधीजीने कहा — "२३ मार्चको पाकिस्तान-दिन मनानेके लिअे मुसलमान जो तैयारियाँ कर रहे हैं, अुससे नोआखालीके हिन्दुओंमें डर फैल गया है। खादी-प्रतिष्ठानसे भी अेक दोस्तने आकर मुझसे कहा है कि नोआखालीकी हालत बिगड़ती जा रही है। मैंने अुन दोस्तसे कह दिया है कि अिस वक़्त मैं बिहारके अपने कामको नहीं छोड़ सकूँगा, क्योंकि मुझे विश्वास है कि अगर बिहारमें मेरा 'मिशन' कामयाब हुआ, तो अुसका असर बंगालपर और शायद हिन्दुस्तानके दूसरे हिस्सोंपर भी पड़ेगा। बिहारके मुसलमान और बंगालके हिन्दू मुझे साम्प्रदायिक लोगोंसे अुनके जान-मालकी हिफ़ाज़त करनेवाला जामिन मान लें। मैं यहाँ करने या मरनेके लिअे ही आया हूँ। अिसलिअे जब तक यहाँके हिन्दू और मुसलमान मुझे

www.vinoba.in

अिस बातका यक़ीन नहीं दिलाते कि अुन्हें मेरी सेवाकी ज़रूरत नहीं है, तब तक मेरे फ़र्ज़की अिस जगहको छोड़नेका सवाल ही नहीं अुठता।"

२२-३-'४७

गांधीजीने, जो मसूढ़ी थानेके दंगेवाले हिस्सोंका ६ दिनका दौरा खत्म करके आज सुबह लौटे थे, बाँकीपुर-मैदानमें शामकी प्रार्थना-सभामें अिकट्ठे हुअे लोगोंके सामने मुआअिना किये हुअे गाँवोंके बारेमें अपने विचार रखे। अुन्होंने गाँववालोंके रवैये-पर तसल्ली ज़ाहिर की, जो न सिर्फ़ अपनी पिछली करतूतोंपर शरमिन्दा थे, बल्कि गांधीजीके सुझाये हुअे तरीक़ोंके मुताबिक़ हर-जाना भी देनेको तैयार थे। गांधीजीने कहा—"अुन लोगोंने मुसलमानोंको राहत पहुँचानेके लिअे खुले दिलसे, जैसा कि देहाती हिन्दुस्तानके लिअे मौजूँ हो सकता है, दान दिया। यहाँ तक कि मेरी मोटरको रोककर भी थैलियाँ भेंट की गअीं। अिन थैलियोंके अलावा मुझे अैसे खत भी मिले, जिनमें अुन्होंने मुसलमानोंको फिरसे बसानेमें मदद देनेकी ख्वाहिश और रजामन्दी ज़ाहिर की है।

"बहुतसी जगहोंमें मुक़ामी हिन्दुओंकी बहादुरीकी वजहसे कोअी घटना नहीं हुअी। मुसलमानोंने ख़ुद मुझे बताया कि दीनापुर सब-डिवीज़नमें कोअी दंगा नहीं हुआ, हालाँकि वहाँके मुसलमान बहुत घबराये हुअे थे।

"मैंने सुबह पिपलवनमें बेआसरा मुसलमान औरतोंके सामने तक़रीर की थी। मैं अिस वक़्त अुन औरतोंकी भावनाओं और अुनकी मौजूदा हालतको बयान करना नहीं चाहता। मेरा दिल दयासे भर गया है, फिर भी मैं आँसू बहाना नहीं चाहता। मैं आपको सिर्फ़ यह बताना चाहता हूँ कि पछतावा कैसे किया जाय। मैंने अुनको तसल्ली देनेकी पूरी कोशिश की और ख़ुदापर भरोसा रखकर हिम्मतके साथ अपने गाँवोंको लौट जानेके लिअे समझाया है। अुस सभामें मुझे यह भी बताया गया कि मुसलमान मर्द और औरतें २३ मार्चके आनेसे डरते हैं, क्योंकि अैसा बताया जाता है कि अुस दिन बिहारमें पंजाब-दिन मनाया जायगा। मैंने अुनसे कहा है कि बिहार सरकारने किसी भी तरहका दिन, चाहे वह पाकिस्तान-दिन हो या पंजाब-दिन, मनानेपर रोक लगा दी है। अुन वज़ीरने, जो वहाँ मौजूद थे, सबको अिस बातका यक़ीन दिलाया कि किसी भी तरहके जलसेकी अिजाज़त नहीं दी जायगी और सारे सूबेमें अिस पाबन्दीपर सख़्तीके साथ अमल किया जायगा। बिहार सरकारने किसान-रैलीको भी बन्द कर दिया है। मेरी रायमें यह ठीक किया गया है। देशकी मौजूदा हवा अैसी है कि किसी भी तरहकी रैली या जुलूस किसी न किसी तरहकी मुसीबत ही पैदा करेगा। भगवद्-गीतामें कहा गया है कि अक्सर कर्ममें अकर्म और अकर्ममें कर्म छिपा रहता है। अिस सचाअीको नअी अुम्दा मिसालोंसे समझाया जा सकता है। मौजूदा ज़मानेकी लड़ाअियोंमें अक्सर कुछ न करना लाज़िमी हो जाता है और अिसलिअे अुसे सच्ची हलचल (कर्म) कह सकते हैं। और, अैसे वक़्तमें कोअी भी नामवारी हलचल पाप ही मानी जायगी। अिसलिअे मैं हिन्दू और मुसलमान दोनोंसे ज़ोर देकर यह कहूँगा कि वे ये दिन न मनायें। अेक सच्चे सत्याग्रहीको अुन लोगोंकी हिदायतोंको, जिन्हें अुसने सत्ता दी है, पूरी श्रद्धाके साथ मानना चाहिये। जो कुछ मैंने कहा है अुसका तल्लुक़ सिर्फ़ २३ मार्चसे ही नहीं है, बल्कि वह आनेके लिअे भी है। जब तक आजकी-सी हवा रहती है, तब तक आप लोगोंको अिस तरहके कोअी अुत्सव नहीं मनाने चाहियें।"

"अगर हिन्दू अपने पिछले कामोंकी ग़लतीको समझ लेते हैं, तो मैं दंगेवाले हिस्सेके हिन्दुओंसे यह अुम्मीद करूँगा कि वे टूटे हुअे मकानोंकी मरम्मत करनेमें जिस्मानी मदद करें। अगर यह काम मरज़ी, खुले दिल और अीमानदारीके साथ किया जाय तो खोया हुआ अैतबार वापस आ सकता है। दूसरा कोअी चारा नहीं।

"मेरे मसूढ़ी आनेके बाद क़रीब ५० आदमियोंने, जिनकी दंगेके सिलसिलेमें तलाश थी, अपने-आपको अफ़सरोंके हवाले कर दिया। शायद अुनकी तादाद अब और बढ़ गअी होगी। मुझे अुम्मीद है, और भी ज़्यादा लोग आगे आकर अपने जुर्मोंका अिक़रार करेंगे। अुनके जुर्मोंका अिक़रार लोगोंमें सिर्फ़ अुनकी हिम्मतके लिअे अिज़्ज़त ही न बढ़ायेगा, बल्कि आख़िरमें सारे सूबेकी अिज़्ज़तको भी बढ़ा देगा।"

२३-३-'४७

गांधीजीका हफ़्तेवार मौन शुरू हो जानेसे प्रार्थनाके बाद सभामें अुनका हिन्दुस्तानीमें लिखा हुआ सन्देश सुनाया गया। वह यों था—"जो लोग यहाँ मौजूद हैं और जिन तक मेरी आवाज़ पहुँच सके, अुनसे मेरी यह सच्ची बिनती है कि वे ज़िन्दगीके मक़सदको समझें। हमारी ज़िन्दगीका यह मक़सद है कि हम अुसकी सृष्टि (खिलक़त) की दिलसे सेवा करते हुअे अुस ताक़तकी सेवा करें, जिसने हमें पैदा किया है और जिसकी दया या मरज़ीपर हम जीते हैं। अुसका मतलब प्रेम है न कि नफ़रत, जिसे हम आज चारों तरफ़ देख रहे हैं। आप इस मक़सदको भूल गये हैं और या तो अेक-दूसरेसे सचमुच लड़ रहे हैं या अुस लड़ाअीकी तैयारी कर रहे हैं। अगर आप अिस संकटको टाल न सके, तो हिन्दुस्तानकी आज़ादीको अेक नामुमकिन सपना समझ लेना चाहिये। अगर आप यह सोचते हों कि सिर्फ़ अंग्रेज़ोंके देश छोड़ देनेसे ही आपको आज़ादी मिल जायगी, तो यह आपकी भारी भूल है। अंग्रेज़ हिन्दुस्तान छोड़ रहे हैं। लेकिन अगर आप इसी तरह आपसमें लड़ते रहे, तो कोई दूसरी ताक़त या ताक़तें देशमें घुस आयेंगी। अगर आपका यह ख्याल है कि आप अपने हथियारोंसे सारी दुनियासे लड़ सकेंगे, तो यह आपकी बेवक़ूफ़ी है।

"अेक दोस्तने लिखा है कि पंजाबमें पलटनके क़ब्ज़ा कर लेनेसे कुछ वक़्तके लिअे अमना-सा हो गया है। वह शान्ति क़ब्रकी शान्ति है। लोग ख़ामोशीके साथ अेक खुली और ज़्यादा भयानक लड़ाअीके लिअे तैयारी कर रहे हैं। हथियार जमा किये जा रहे हैं। अिसके बाद पलटनको भी लोगोंपर क़ाबू पाना नामुमकिन हो जायगा। मेरा यह पक्का विश्वास है कि जो शान्ति फ़ौज या पुलिसकी मददसे क़ायम की जाती है, वह शान्ति ही नहीं होती। सच्ची शान्ति तभी क़ायम होगी, जब दोनों नहीं तो कमसे-कम अेक जाति अहिंसासे मिलनेवाली सच्ची बहादुरीको अपनायेगी।

"बिहारने अिस बातको महसूस कर लिया है कि औरतों और बच्चोंको मारनेमें कोअी बहादुरी नहीं है। यह निरी बुज़दिली है। अगर बिहार अिस ख़ामोश ताक़तकी सच्ची बहादुरीको साबित करके तमाम दुनियाको ज़िन्दगीका सच्चा रास्ता दिखा सका, तो वह अेक बहुत बड़ी चीज़ होगी।"

आख़िरमें गांधीजीने लोगोंको बताया कि सोमवारकी प्रार्थना-सभा पूनापूनके पास होगी।

२४-३-'४७

राजघाटकी प्रार्थना-सभामें बहुत शोर था। औरतोंकी बड़ी तादाद अैसी थी, जो सभाओंमें आनेकी आदी नहीं थीं। अुन्होंने गप-शपका ताता बाँध दिया। अिस शोरके बावजूद भी रोज़की प्रार्थना पूरी हुअी। जब गांधीजीके भाषणका वक़्त हुआ तो अुन्होंने कहा—"मुझे अपनी आवाज़ सुननेकी ज़रूरतसे ज़्यादा बेक़रारी नहीं है। अगर यह टे-टें चलती रही तो मैं आपसे कुछ नहीं कहूँगा।" अिसलिअे अुन्होंने स्वयंसेवकोंसे कहा—"आपको ख़ास कर आज जैसे नये लोगोंको, मुँहसे कह कर या दूसरे किसी तरीक़ेसे, आम सभाओंके क़ायदे समझाकर तैयार करना चाहिये। आप अैसे लोगोंमें बाँटनेके लिअे छोटे-छोटे परचे तैयार करें।"

अिसके बाद अुन्होंने कहा—"मैं बहरवानका मुआअिना करने गया था। वहाँ हिन्दुओंके घरोंको नुक़सान पहुँचाया गया है। जैसा कि सर सैयद अहमदने कहा था, मेरे लिअे हिन्दू और मुसलमान देशकी दो आँखोंकी तरह हैं। अिस तरहकी अिनी-गिनी मिसालोंसे हिन्दुओंने मुसलमानोंपर जो ज़ुल्म ढाये हैं, अुनका वहशियानापन कम नहीं हो जाता।"

(अंग्रेज़ीसे)

www.vinoba.in

वनस्पति घीका धोखा

अुस दिन जब मध्यप्रान्त (सी० पी०) के जनताकी तन्दुरुस्तीसे ताल्लुक़ रखनेवाले वज़ीर डॉ० हसनसे सूबाअी अेसेम्बलीमें पूछा गया कि क्या सरकार वनस्पति घीकी बिक्रीपर पाबन्दियाँ लगानेका अिरादा करती है, तो अुन्होंने जवाब दिया:—"सरकारको यह सलाह दी गअी है कि वनस्पति घीकी बिक्रीको रोकने या टैक्स लगाकर अुसकी कीमत बढ़ानेसे जनताकी तन्दुरुस्तीको नुक़सान पहुँचेगा।"

अिस रिपोर्टको पढ़कर मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ। कुछ ही हफ़्ते पहले महात्मा गांधीने 'हरिजन' में वनस्पति घीकी बिक्रीकी ज़ोरदार शब्दोंमें निन्दा की थी और अुसे जनताके साथ की जानेवाली 'धोखेबाज़ी' कहा था। सायन्सी नज़रसे भी यह चीज़ अब वग़ैर किसी शकके साबित की जा चुकी है कि वनस्पति घी तन्दुरुस्तीको नुक़सान पहुँचाता है। अिसलिअे यह ताज्जुबकी बात है कि जनताकी तन्दुरुस्तीसे सम्बन्ध रखनेवाले वज़ीर भी अिससे पैदा होनेवाली नाजुक हालतको महसूस नहीं करते।

अिस सिलसिलेमें पिछले साल बंगलोरमें मनाये गये सायन्स कांग्रेस-हफ़्तेके दरमियान वनस्पति घीके बारेमें जो बहस हुअी थी, अुसके कुछ हिस्से मैं नीचे देना ही ज़्यादा अच्छा समझता हूँ:—

"वनस्पति घीके क़ूवत बढ़ानेवाले गुणोंके सवालपर हर पहलूसे बहस की गअी और यह महसूस किया गया कि वनस्पति घीके क़ुवत बढ़ानेवाले गुणोंके बारेमें, या कमसे कम अुसकी शुद्धताके बारेमें किसी भरोसेके लायक़ और सच्चे अैलानके विना अुसका बड़े पैमानेपर मनमाना अिस्तेमाल करना राष्ट्रकी तन्दुरुस्तीके लिअे ख़तरनाक साबित होगा। जैसा कि मद्रासके प्रो० दामोदरनने बताया है, यह बड़े ताज्जुबकी बात है कि अिस धन्धेके विकास और तरक़्क़ीके बावजूद वनस्पति घीके ग़िज़ा पहुँचानेवाले गुणोंके बारेमें बहुत कम जानकारी मिलती है। अिस धन्धेको चलानेवाले मज़बूत लोगोंने बेशक वनस्पति घीके बारेमें कुछ हक़ीक़तोंको जान-बूझकर भुला देनेकी साजिश की है, क्योंकि अिनका वनस्पति घीके धन्धेपर बुरा असर पड़ सकता है।

"फिर भी, तक़दीरसे अिस देशके कुछ वैज्ञानिकों (सायन्सदानों) ने वनस्पति घीके क़ूवत बढ़ानेवाले गुणोंका पता लगानेमें दिलचस्पी ली है। बहसमें बोलनेवाले डॉ० वी० अेन० पटवर्धन (बम्बई) ने यह बताया कि वनस्पति घीका प्राणियोंके विकास और नस्ल पैदा करनेकी ताक़तपर बुरा असर पड़ता है। अुनकी खोजोंने यह साबित कर दिया है कि चरबीके नाते सिर्फ़ वनस्पति घीके सहारे पाले गये चूहोंके बच्चे बचपनमें ही मर जाते हैं; थोड़ेसे जो बच जाते हैं अुनका ठीक ठीक विकास नहीं होता। डॉ० पटवर्धनने कहा कि जिन चरबियोंके बारेमें मैंने खोज की, अुनमें मक्खन विकास, परवरिश, नस्ल पैदा करने और दूध पिलानेकी ताक़तकी दृष्टिसे अव्वल साबित हुवा। वनस्पति तेलमें हैड्रोजन मिलानेसे भी कोई ख़ास फ़ायदा नहीं होता क्योंकि खालिस तेल भी अुतना ही पोषक होता है। इसके सिवा, दूसरे ज़रियोंसे हासिल की गअी जानकारी यह बताती है कि हैड्रोजन मिली हुअी चरबियोंवाली ख़ुराकके सहारे पाले-पोसे और पैदा किये गये जानवरोंकी दूसरी या तीसरी पीढ़ीमें हैड्रोजन मिले हुअे तेलोंका बुरा असर मालूम पड़ सकता है।

"शायद तेलोंको साफ़ करने और अुनमें हैड्रोजन मिलानेसे — वनस्पति घी तैयार करनेमें ये दो बातें लाज़िमी तौरपर की जाती हैं — तेलके क़ूवत बढ़ानेवाले गुण और सारे ज़रूरी विटामिन, यानी बिना मिलावटके चरबी बढ़ानेवाले अेसिड और दूसरे विकास करनेवाले तत्त्व (जुज़), खत्म हो जाते हैं। अिण्डियन अिन्स्टिट्यूट ऑफ़ सायन्सके फर्मेण्टेशन टेकनॉलॉजीके सेक्शनमें मिस डिसौज़ाने कीड़ों-पर ख़ुराकके जो तजरबे किये, वे भी अिस बातकी ताअीद करते हैं।

"ग़िज़ा पहुँचानेकी दृष्टिसे साफ़ किया हुआ और हैड्रोजन मिला हुआ वनस्पति घी, जिसका चलन लोगोंमें ख़तरेकी हद तक पहुँच रहा है, मक्खनके घीसे बदतर ही नहीं है, बल्कि खानेवालोंको नुक़सान भी पहुँचाता है। बहसमें भाग लेनेवाले सायन्सदानोंका फ़ैसला साफ़ और निश्चित है — अगर खा सको तो मक्खन खाओ; नहीं तो दूसरा कोअी भी आसानीसे पच सकनेवाला विना मिलावटका तेल खाओ।"

वनस्पति घीका धन्धा सचमुच आम लोगोंका बुरे-से-बुरा पूँजीवादी शोषण है। अब वह समय आ गया है, जब कि कांग्रेसी वज़ारतोंको जल्दी ही वनस्पति घीकी बिक्रीपर रोक लगानेकी ज़रूरत महसूस करनी चाहिये। सच पूछा जाय तो वनस्पति तेलमें हैड्रोजन मिलानेपर अेकदम पूरी-पूरी रोक लगा देनी चाहिये। अैसे अिश्तहार क़ानूनन बन्द करा दिये जायँ, जो धोखा देकर जनतामें यह विश्वास पैदा करते हैं कि वनस्पति घी तन्दुरुस्तीको फ़ायदा पहुँचाता है। जो घी नहीं खरीद सकते, अुन्हें वनस्पति घीके बदले खालिस वनस्पति तेल खरीदनेके लिअे राज़ी करना चाहिये। अिसलिअे लोक-प्रिय सरकारोंको चाहिये कि वे अिस बारेमें जनमत तैयार करें। वनस्पति घीकी बुराअियोंको जाननेवाले लोगोंका फ़र्ज़ है कि वे समाजके साथ किये जानेवाले अिस जुर्मके ख़िलाफ़ अपनी ज़ोरदार आवाज़ अुठायें।

(अंग्रेज़ीसे)

श्रीमन्नारायण अग्रवाल

दूसरोंके तजरबेसे सीखो

[अेक चीनी कहावत है: 'अक्लमंद अपने तजरबोंसे सीखता है, ज़्यादा अक्लमंद दूसरोंके तजरबोंसे'। लुअी ब्रूमफील्डका नीचे दिया हुआ लेख पिछले अक्टूबरके "रीडर्स डाअिजेस्ट"में छपा था। यह हमें सिखाता है कि कम-से-कम, हम हिन्दुस्तानवाले अपनी ज़मीनके साथ खिलवाड़ करनेकी हालतमें नहीं हैं। हमें अुसे धीरज और क़द्रकी भावनासे बरतना चाहिये। **वा० गो० दे०**]

पिछली वसंतमें अेक साफ़, ख़ूबसूरत दिन मैं हवाअी राहसे आस्टिन (टेक्साज़) से चिकागो गया। हमारे हवाअी जहाज़के नीचे मिसिसिपी नदीके लम्बे-चौड़े कछारका अेक बड़ा हिस्सा नक़्शेके माफ़िक खुला हुआ था। किसी ज़मानेमें वह दुनियाकी अपने बराबरकी खेतीकी ज़मीनोंमें सबसे ज़्यादा अुपजाअू था।

अब भी वह कहीं कहीं बहुत अुपजाअू है। लेकिन अुसके ज़्यादातर हिस्सेकी पैदावारी ताक़त अब लगातार कम होती जा रही है। अुसके ज़्यादातर जंगल काट डाले गये हैं और अुसकी बहुतसी खेतीकी ज़मीन बरबाद हो गयी है। यह सब सौ बरसोंसे कममें और, कहीं कहीं तो, अेक पीढ़ीके क़रीबमें ही हो गया है।

आयोवाके बीचमें पहुँचनेपर मेरे साथीने नीचे देखकर कहा — 'अह! कितना सुन्दर नज़ारा है! यहाँ तो बहुत खानेका सामान पैदा किया जा रहा है!'

सुन्दरताके नुक़्ता-निगाहसे वह ज़रूर ख़ूबसूरत नज़ारा था . . . .

वह सुन्दर तो था ही, मगर मेरे साथीने, जो शहरके रहनेवाले थे, सिर्फ़ अूपरी सतह देखी। अुन्होंने वह बदसूरत, डरावनी चीज़ें नहीं देखीं, जो अुनकी जेबसे रुपया और शायद, अुनकी हड्डियोंसे चूना और अुनके दिमाग़से फ़ासफ़रस (दिमाग़की ताक़त) भी निकाले ले रही हैं। मैंने अुन्हें बताना शुरू किया कि अुस सुन्दर तसवीरके नीचे क्या छिपा हुआ है। मैंने टेक्साज़की काली ज़मीनको छोड़नेके वक़्तसे बात शुरू की।

काली ज़मीन (ब्लैक लैंड्स) की बिना जोती मिट्टी पहले सेन्द्रिय चीज़ोंसे ताज़ुबके लायक़ भारी और गहरी थी। अिसके नीचे चूनेके पत्थर या पिंडोर (चिकनी, बहुत अुपजाअू मिट्टी) थी। अैसी मिट्टी दुनियाके बहुत कम हिस्सोंमें — खासकर टेक्साज़, अलाबामा, मिसिसिपी और रूसी यूक्रेनमें — पायी जाती है। जहाज़के आगे बढ़नेपर यह मालूम हुआ कि टेक्साज़की काली ज़मीनकी बड़ी बड़ी

www.vinoba.in

पट्टियाँ और गोल घेरे सफ़ेद या भूरे हो गये हैं। भूरेका मतलब था कि ऊपरकी उपजाऊ मिट्टी क़रीब क़रीब चली गअी है। सफ़ेदका, जिसमें चूनेके पत्थर दीखने लगे थे, यह मानी था कि उपजाऊ मिट्टी बिलकुल ही खत्म हो चुकी है। अब उस बिगड़ी हुअी और भूरी ज़मीनको फिरसे उपजाऊ बनानेके लिअे भारी खर्च और कअी बरसोंकी मेहनतकी ज़रूरत होगी। सफ़ेद चूनेका पत्थर निकल आनेपर लाखों बरसों तक कोअी पैदावार न हो सकेगी।

यह उपजाऊ मिट्टी कैसे चली गयी? वह बह गयी, या उड़ गयी; क्योंकि, उसे हर बरस जोता जाता था और बरसात व हवाके उपद्रवोंके लिअे खुला छोड़ दिया जाता था। अिसी वक़्त हम उत्तरी टेक्सासकी लाल ज़मीनके ऊपरसे गुज़रे। किसी वक़्त यह दुनियाकी अच्छी-से-अच्छी चराहगाह थी। लाखों भैंसें यहाँकी रसभरी घास चरा करती थीं और साफ़ झरने बहा करते थे; लेकिन बहुत ज़्यादा चराअी होने और हर साल आग लगायी जानेके कारण अब वहाँ सिर्फ़ पतला घास-फूस और मोटी 'जानसन' घास पैदा होती है। अमेरिकाके ज़्यादातर जानवर पालनेवाले अिसे रोगकी निशानी मानते हैं। अब वहाँ बहुत कम गिरी-गिरायी पशु-शालाअें हैं और अेक समयकी अुस हरी-भरी चराहगाहपर अब सिर्फ़ अिने-गिने, दुबले-पतले जानवरोंको चराया जाता है।

सबसे खराब बात तो यह है कि, अुन जगहोंको छोड़कर, जहाँ होशियार किसानोंने अपने खेतोंको अूँचा कर लिया है, बाक़ी सारी ज़मीनमें बराबर बड़ी बड़ी नालियाँ बनती जा रही हैं। हरसाल वह करोड़ों टन लाल मिट्टी निगलती जाती हैं। बसंतकी बरसातसे बढ़ी हुअी नदियों और नालोंका पानी खूनके माफ़िक लाल होता है।

सरकारी आँकड़े बताते हैं कि पिछले कुछ बरसोंमें हमारी बड़ी फ़सलोंकी फ़ी-अेकड़ पैदावार बढ़ गअी है। . . . मगर अलग-अलग करके देखनेसे ये आँकड़े सही नहीं मालूम होते। कोअी पैदावार न हो सकनेके कारण जो हज़ारों अेकड़ ज़मीन पड़ती छोड़ दी गअी है अुसका अुनमें कोअी हिसाब नहीं लगाया गया और न अिस सचाअीका ही ख़्याल रखा गया है कि, जो ज़मीन अब भी जोती जा रही है अुसकी पैदावार सुधरे हुअे बीजोंसे — जिनसे नक़ली तौरपर पैदावार बढ़ जाती है — बढ़ायी जा रही है। अिस बढ़तीका कोअी संबंध ज़मीनसे नहीं है।

लोगोंको अच्छी तरह मालूम है कि १८५० के पहले मकाअीकी पैदावारवाली पट्टियोंके खेतोंमें, दवाओंकी नक़ली खाद दिये बिना, अक्सर १२० बुशेल फ़ी-अेकड़ पैदावार हुआ करती थी। आज-कल अिलिनोअीकी मैक्-लिअन काअुण्टीमें, जो कि देशके सबसे ज़्यादा पैदावार-वाले हिस्सोंमें से है, अेकड़-पीछे सिर्फ़ ५५ बुशेल पैदावार होती है। यह हमारी ज़मीनके खराब होनेका परिणाम है।

हमने हवाअी जहाज़से जो कुछ देखा वह उपजाऊ ज़मीनके बरबाद हो जाने या अुसकी ताक़त खत्म हो जानेका लेखा था। मेरे साथीको यह नहीं सूझा कि अिस दुःखदायी बातके कारण अुन्हें खानेकी चीज़ोंके ज़्यादा दाम देने पड़ते हैं, मदद करनेके लिअे ज़रूरी, और शायद, आगेकी मदद और योजनाओंके लिअे भी, ज़्यादा टैक्स देना पड़ता है। अुन्होंने महसूस नहीं किया कि बेताक़त ज़मीनपर, जिसमें अिन्सानकी तन्दुरुस्तीके लिअे ज़रूरी धातुअें न हों, लाज़िमी तौरपर अैसी ही फ़सलें और जानवर पैदा होते हैं जिनमें वह धातुअें नहीं होतीं; और, जो लोग अैसी बेताक़त ज़मीनपर पैदा हुअी चीज़ें खाकर अपनी गुज़र-बसर करते हैं, अुनकी शारीरिक और मानसिक ताक़त धीरे धीरे कम होती जाती है।

मिसालके तौरपर, बहुतसे लोग समझते हैं कि सब क़िस्मकी लेट्यूस (फ़लोंके सलादमें डालनेकी अेक हरी चीज़)में बराबर विटामिन और धातुअें होती हैं। यह सही नहीं है। अेक लेट्यूसमें विटामिन और धातुअें खूब हो सकती हैं, मगर दूसरेमें पोषण-शक्ति (ग़िज़ाअी माद्दा) अुतनी ही हो सकती है जितनी कि एक ग्लास पानीमें। यह अिसलिअे कि, सब्ज़ीकी धातुओं और, बहुत हद तक, अुसके विटामिनका निर्णय अुस ज़मीनकी धातुओंके मुताबिक़ होता है, जिसमें कि वह पैदा हुअी हो। बिगड़ी हुअी और बेताक़त ज़मीनके बलपर तन्दुरुस्त नागरिक पैदा नहीं हो सकते।

मेरे साथीने कभी महसूस नहीं किया कि जैसे जैसे मिट्टीकी क़ुदरती पैदावारी ताक़त कम होती जाती है, वैसे वैसे पैदावारका खर्च बढ़ता जाता है। अिस प्रकार खरीदनेवालेको ज़्यादा दाम देना पड़ता है और किसानका मुनाफ़ा घटता है।

अुस 'खूबसूरत' नज़ारेने जो कुछ बताया वह सिर्फ़ क़ुदरती ज़रियोंकी — जिनपर अिस राष्ट्रका धन और बल टिका हुआ है — बरबादीका भयानक लेखा था। अगर खेतीकी ज़मीनकी बरबादी लगातार जारी रही, तो संभव है कि खानेकी चीज़ोंकी क़ीमत तब तक बढ़ती जाय जब तक कि सिर्फ़ धनी लोगोंमें ही मांसकी भुनी हुअी बोटी, मक्खन और मलाअी खरीदनेकी ताक़त रह जाय। . . . . .

अमरीकाके कअी हिस्सोंमें मिट्टी और पानीकी हिफ़ाज़त करने और फिरसे मिट्टी डालनेकी जो कोशिशें हो रही हैं अुनकी बेपरवाही करना ठीक न होगा। मिट्टीकी हिफ़ाज़तके जो क़ानून बनाये गये हैं वे सुधारकी ओर बहुत बड़े क़दम हैं। किसान खुद अुनकी तामील करते हैं, मगर अमरीकाके ज़मीनकी हिफ़ाज़त करनेवाले महकमेके नौकर अुन्हें अिंजीनियरोंकी मदद और सलाह देनेके लिअे हमेशा तैयार रहते हैं।

सरकार और हमारे कुछ बड़े अुद्योग-मण्डल और सभा-समितियाँ — जैसे कि, 'ज़मीनके दोस्त' और 'मिट्टीके दोस्त' — सब बहुत अहम कारगुज़ारी दिखा रहे हैं। . . . .

हमारे देशके बहुत बड़े हिस्सेमें अब भी मिट्टीको रोकने और बरसातके पानीको, जहाँ वह गिरे वहीं, जमा कर रखनेका काम बाक़ी है। अिस कामकी आखिरी ज़िम्मेदारी किसानोंपर है। मगर कुछ हिस्सोंमें मिट्टी अितनी बेताक़त हो चुकी है कि अुसपर पैदा होनेवाली खानेकी चीज़ोंमें धातुअें बिलकुल नहीं होतीं। अिससे वहाँके गाँवोंके लोग अितने कमज़ोर हो गअे हैं कि वे खुद अपनी मदद नहीं कर सकते। वहाँ सरकारकी ओरसे कुछ अुपाय किये जाने ज़रूरी हैं। ज़मीनके बिगाड़को और बाढ़ोंको रोकनेमें जो रुपया लगाया जायगा अुससे राष्ट्रको बहुत बड़ा लाभ होगा।

अिस नज़ारेको आप रेलगाड़ी या मोटरकी खिड़कीसे देखकर मेरी कहानीकी सचाअी मालूम कर सकते हैं। कभी कोशिश करके देखिये। याद रखिये कि हरअेक बिगड़े हुअे खेत, कीचड़ भरी नदी, जलाये हुअे जंगल, बरबाद हुअी और पड़ी हुअी ज़मीनके लिअे अूँची क़ीमतोंके रूपमें, ज़्यादा करके मददके रूपमें और, चूँकि खानेकी चीज़ोंकी चढ़ी हुअी क़ीमतोंके कारण डालरकी खरीदनेकी ताक़त कम हो गयी है, अिसलिअे, ज़्यादा वेतनके लिअे हड़तालोंके रूपमें, आपको रुपया देना पड़ता है। याद रखिये कि हमारी ज़मीन और जंगलों और दूसरे क़ुदरती ज़रियोंके नाश हो जानेपर अगर दुनियाभरका सोना हमारे फ़ोर्ट नाक्समें गड़ा हुआ हो या हमारा खज़ानेका महकमा ठेले भर-भरकर बैंक नोट निकालता रहे, तो भी हमारा कोअी लाभ न होगा; क्योंकि, हम अेक राष्ट्रके रूपमें खत्म हो जायँगे।

(अंग्रेज़ीसे)

विषय-सूची

		पृष्ठ
सृजनात्मक या तखलीक़ी आज़ादी	... जे० बी० कृपालानी	८१
अनाज कैसे बचाया जाय?	... देवेन्द्रकुमार गुप्त	८२
बीबी अमतुल सलाम	... सुशीला नय्यर	८३
पैसे देकर अन्धे बनो!	... जे० सी० कुमारप्पा	८४
गांधीजीकी बिहार-यात्राकी डायरी		८५
वनस्पति घीका धोखा	... श्रीमन्नारायण अग्रवाल	८७
दूसरोंके तजरबेसे सीखो	... वालजी गोविन्दजी देसाअी	८७

www.vinoba.in